''सापेक्ष अर्थशास्त्र : विश्व शांति और समृद्ध का दर्शन'' विषयक व्याख्यान का आयोजन अहिंसा भवन में

लाडनूं, 24 मई, 2009।

आधुनिक युग की आर्थिक समस्याओं का स्थायी समाधान सापेक्ष अर्थशास्त्र की मूलभूत अवधारणाओं में निहित है। सापेक्ष अर्थशास्त्र मनुष्य की आधारभूत आवश्यकताओं, व्यक्तिगत अधिकारिता, संसाधनों के समुचित उपभोग एवं साधन शुद्धि पर आधारित है। उपरोक्त विचार भारत सरकार के आर्थिक सलाहकार श्री माणकचन्द सिंघी ने ''सापेक्ष अर्थशास्त्र : विश्व शांति और समृद्ध का दर्शन'' विषयक व्याख्यान में व्यक्त किए। इस व्याख्यान का आयोजन आचार्यश्री महाप्रज्ञ, युवाचार्यश्री महाश्रमणजी के सान्निध्य में एवं जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय की कुलपति डॉ. समणी मंगलप्रज्ञाजी की उपस्थिति में विश्वविद्यालय के अहिंसा एवं शांति विभाग द्वारा 'अहिंसा भवन' में आयोजित किया गया। श्री सिंघी ने विचार व्यक्त करते हुए कहा – वर्तमान में धर्म एक दर्शन बन कर रह गया है जबकि आज आवश्यकता इस बात की है कि प्राचीन काल कर तरह धर्म जीवन का व्यवहार बने। आर्थिक दृष्टिकोण से धर्म का जीवन में व्यवहार उपभोग की प्रवृत्ति है जिसका प्रतिफल कालांतर में व्यक्ति को मिलता है। वर्तमान आर्थिक जगत में उपभोक्ता ही आर्थिक क्रियाओं का सर्वेसर्वा है। उपभोक्ता की पसंद एवं प्राथमिकता के आधार पर ही उद्यादन की प्रवृत्ति एवं यात्रा, संसाधनों का उपभोग एवं वितरण तथा सेवाओं का उपयोग निर्धारित होता है। इसके विपरीत सापेक्ष अर्थशास्त्र में संसाधनों की उपलब्धता एवं सामाजिक लाभ को दृष्टिगत रखते हुए उत्पादन उपभोग एवं विनिमय की क्रियाएं संपादित की जाती है। सापेक्ष अर्थशास्त्र की व्याख्या करते हुए श्री सिंघी ने कहा – यह आर्थिक चिंतन आर्थिक विकास एवं भौतिकता तथा आध्यात्मिकता एवं नैतिक का चतुष्कोण प्रस्तुत करता है। आदर्शात्मक अर्थशास्त्र की तरह सापेक्ष अर्थशास्त्र स्वअनुभव पर आधारित है। इसके लिए आवश्यक है कि व्यक्ति की भावनाओं एवं अभिवृत्तियों में सकारात्मक परिवर्तन है। सापेक्ष अर्थशास्त्र आर्थिक जगत से विलुप्त हुए नैतिक मूल्यों एवं नैतिक मापदण्डों की पुर्नस्थापना कर एक ऐसी आर्थिक विकास की अवधारणा प्रस्तुत करता है जहां वृद्धि और विकास से कोई समझौता नहीं है। कार्यक्रम का संयोजन अहिंसा एवं शांति विभाग के अध्यक्ष प्रो. बच्छराज दूगड़ ने किया।

प्रदूषण रहित वाहन का लोकार्पण

लाडनूं, 24 मई, 2009।

जैन विश्व भारती के प्राकृतिक वातावरण को सुरक्षित रखने एवं पर्यावरण संरक्षण की दिशा में पहल करते हुए प्रदूषण रहित वाहन का शुभारंभ किया गया। यह वाहन जयसिंहपुर के घोड़ावत परिवार द्वारा जैन विश्व भारती के अध्यक्ष सुरेन्द्र चोरड़िया को सुपुर्द किया गया। जैन विश्व भारती के अध्यक्ष सुरेन्द्र चोरड़िया, आदर्श साहित्य संघ के अध्यक्ष नोरतनमल दूगड़ एवं जैन विश्व भारती के उपाध्यक्ष विनोद बैद ने घोड़ावत बंधुओं का स्मृति चिन्ह एवं साहित्य भेंट कर अभिनंदन किया।

इससे पूर्व आचार्यश्री महाप्रज्ञ एवं युवाचार्यश्री महाश्रमण के मंगलपाठ से वाहन का लोकार्पण अहिंसा भवन में हुआ।

राष्ट्रीय संस्कार निर्माण के छात्र–छात्राओं ने किया अभिनव सामायिक का प्रयोग

मनुष्य में सभी प्राणियों के प्रति दया का भाव पुष्ठ हो : युवाचार्य महाश्रमण

लाडनूं, 24 मई, 2009।

श्री भूपेन्द्र मूथा एव श्री कैलाश कोठारी के नेतृत्व में चल रहे दस दिवसीय राष्ट्रीय संस्कार निर्माण शिविर के चौथे दिन जैन विश्व भारती के सुधर्मा सभा में युवाचार्यश्री महाश्रमण ने शिविरार्थियों को अभिनव सामायिक का प्रयोग करवाते हुए कहा कि बाल पीढी अच्छी व संस्कारी बने और बच्चों में सरलता का भाव होना चाहिए।

युवाचार्यश्री महाश्रमण ने यह भी कहा कि मनुष्य गति का मिलना दुर्लभ है, व्यक्ति में सभी प्राणियों के प्रति दया का भाव पुष्ट हो, मैं अपनी ओर से किसी को दुःख न दूं ऐसी भावना रखना वाले की आत्मा निर्मल बनती है और व्यक्ति पुनः मनुष्य जन्म को प्राप्त कर सकता है।

शिविर के संयोजक श्री भूपेन्द्र मूथा ने जानकारी देते हुए बताया कि मुनि नीरजकुमारजी व मुनि जीतेन्द्रकुमारजी के निर्देशन में छात्र वं साध्वी शुभप्रभाजी, साध्वी शशिप्रभाजी के निर्देशन में छात्राओं की कक्षाएं व्यवस्थित रूप से नियमित चल रही है।

तीन दिवसीय राष्ट्रीय किशोर मण्डल के अधिवेशन का दूसरा दिन

छात्र लक्ष्य बनाकर जीयें : साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा

लाडनूं, 24 मई, 2009।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के तत्वावधान में चल रहे तीन दिवसीय पांचवे राष्ट्रीय किशोर मण्डल के अधिवेशन के दूसरे दिन ऋषभ द्वार में साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा ने छात्रों को लक्ष्य बनाकर जीने की प्रेरणा देते हुए कहा कि छात्र सच्चे वैरागी बने सच्चे वैरागी का अर्थ है राग–द्वेष मुक्त जीवन जीना जिससे उनका भावी जीवन अच्छा बन सकता है।

मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुत विभा ने कहा कि किशोरों का महत्त्वपूर्ण जीवन होता है, उन्हें आध्यात्मिक पक्ष की ओर अग्रसर होने की प्रेरणा देते हु कहा अच्छा श्रावक बनने के लिए इतिहास को गहराई से पढें।

इस अवसर पर अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के कोषाध्यक्ष श्री प्रदीप बोथरा ने साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा को व श्री अजय चौरड़िया ने साध्वी कल्पलताजी को किट भेंट की।

अशोक सियोल

99829 03770